निदेशक का मनोगत

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में संचालक के तौर पर दिनांक 18 अप्रैल 2018 को मैंने कार्यभार संभाला। इसलिए मैं सर्वप्रथम महाराष्ट्र के महामहिम राज्यपाल महोदय, केंद्रीय सांस्कृतिक मंत्री - नई दिल्ली, तथा केंद्र के कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र के सांस्कृतिक मंत्री इनका मैं ह्रदय से आभारी हूँ। मुझे अत्यंत हर्ष है की, महानिर्मिति इस संस्था में तकनीकी काम संभालने के पश्चात अब कला क्षेत्र में कार्य करने का मौका मुझे मिला है। इस मौके को भुनाने का मैं पूरा प्रयास करूँगा।इस केंद्र के अधीन इस समय महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, आँध्रप्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना ये ६ राज्य आते हैं, इस कारण काम और आशाएं भी अधिक हैं।

फिलहाल द. म. क्षे. सांस्कृतिक केंद्र में अनुभव सिद्ध कर्मचारी कार्यरत हैं। विगत कई वर्षों से यहाँ सेवारत होने से सबको कामकाज की सम्पूर्ण जानकारी है। मैंने सभी को आवाहन किया है कि, हम सब मिलजुलकर कार्य करेंगे एवं नागपुर के सांस्कृतिक वैभव में विशेष योगदान देंगे।सभी कर्मियों से मिलने वाला प्रतिसाद भी उत्साहवर्धक है।

सभी पारंपारिक एवं अप्रचलित कलाओं का पुनरुत्थान, आदिवासी नृत्य प्रकारों को प्रोत्साहन, महाराष्ट्र के पोवाड़ा - लावणी - भारुड़ - जोगवा - वाघ्या मुरळी - दंढार - झाड़ीपट्टी ऐसे सांस्कृतिक वैभव का दर्शन अन्य राज्यों को करवाना, तथा अन्य राज्यों के लुप्तप्राय हो रहे कलागुणों को महाराष्ट्र में बढ़ावा देने की मेरी मंशा हैं।

इसी प्रकार अभिजात भारतीय संगीत, नाट्यसंगीत, लोककला, चित्रकला, मूर्तिकला - पेंटिंग, छायाचित्रकला, उपशास्त्रीय गीतप्रकार इनका भी जतन होना चाहिए तथा स्थानीय कलाकारों को मंच उपलब्ध किया जाना चाहिए। गडचिरोली, बस्तर जैसे दुर्गम प्रदेश के कलाकारों को न्याय मिलना आवश्यक है। इस उद्देश्य से सबको कार्यवाही करनी चाहिए, ऐसा मेरा कार्यक्रम अधिकारियों को आवाहन है।

कलाक्षेत्र में काम करते हुए केंद्र के प्रत्येक कार्यक्रम में वृद्ध एवं वरिष्ठ कलाकारों का सम्मान, केंद्र की उत्तम वेबसाइट तैयार करना, केंद्र की जानकारी देनेवाली डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाना, केंद्र की पुरानी ईमारत का पुनर्निर्माण करना, फिलहाल केंद्र द्वारा आयोजित सभी लोकप्रिय कार्यक्रमों के स्तर में बेहतरी एवं संख्या में बढ़ोतरी करना तथा अनजान, उपेक्षित कलाकारों को प्रोत्साहन देना ऐसी विविधरूपी कार्यशैली विकसित करने का हमारा प्रयास रहेगा।

उच्च स्तर प्राप्त इस सांस्कृतिक केंद्र को राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलें इसे उद्देश्य से हम सभी हमेशा प्रयासरत रहेंगे। राष्ट्रनिर्माण में सांस्कृतिक क्षेत्र का महत्व अनन्यसाधारण है। इसीलिए हम सबको इस सांस्कृतिक केंद्र का अभिन्न अंग होकर राष्ट्रनिर्माण के पवित्र कार्य में अपना योगदान देना हैं।इस हेतु सभी को मेरी ह्रदय से शुभकामनायें।

डॉ. दीपक खिरवड़कर
निदेशक,
दमक्षेसां. केंद्र, नागपुर

द.म.क्षे.सां. केंद्र द्वारा किये गए एवं संयुक्त सहभागिता के आयोजन तथा उनकी झलकियाँ

दिसंबर –2018

1. 'आनंदम' - मासिक योग शिविर का आयोजन नवम्बर माह के दौरान प्रतिदिन प्रातः 6:30 से 7:30 के बींच दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र मुख्यालय परिसर में किया गया। इस शिविर को नागरिकों द्वारा उत्तम प्रतिसाद मिल रहा है तथा योगकला का जतन भी हो रहा है।

◉ ऑक्टेव@नागपुर – पूर्वोत्तर राज्यों की कला प्रस्तुतियाँ ◉

❖ प्रथम दिवस ❖

१.पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र एवं दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में नागुपर में आयोजित "ऑक्टेव / नागुपर" की शनिवार को प्रारम्भ हुआ। जिसमें भारत के उत्तर पूर्व के आठ राज्यों की सतरंगी कलाओं और वहां की मनोरम संस्कृति का दिग्दर्शन करने का अवसर कला रसिकों को मिल सका।

पूर्वोत्तर भारत की कला, संस्कृति और शिल्प कलाओं को देश के अन्य राज्यों में प्रदर्शित कर "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की भावना को प्रबल करने के ध्येय से आयोजित इस उत्सव का उद्‌घाटन नागपुर की मेयर माननीय नन्दाताई जिचकार ने दी प्रज्ज्वलित करके किया। ऑक्टेव के उद्‌घाटन अवसर पर प्रसिद्ध कोरियोग्राफर तरूण प्रधान द्वारा परिकल्पित कार्यक्रम प्रदर्शित किया गया जिसमें असम का "भोरताल", मणिपुर का "पुंग ढोल चोलम", मिजोरम का चेराव आदि नृत्य सुरम्य और मनोरम बन सके। दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर के परिसर में आयोजित इस चार दिवसीय उत्सव के उद्‌घाटन अवसर पर असम के बरपेटा का भोताल नृत्य में नर्तकियों की भाव भंगिमाएं दर्शनीय बन सकी वहीं संकीर्तन परंपरा से जुड़े इस नृत्य की संरचना दर्शकों को का मोह गई। इस अवसर पर ही मणिपुर के ढोल वादको ने पुंग ढोल चोलम नृत्य से दर्शकों को रोमांचित सा कर दिया। एक ताल पर ढोल की धमक और पुंग की मीठी टंकार ने दर्शकों को पूर्वोत्तर की अनूठी संस्कृति से रूबरू करवाया।

मिजोरम का "चेराव" (बैम्बू डांस) दर्शकों को खूब रास आया। प्रस्तुति में लोक वाद्यों की लयकारी पर कलाकारों व नृत्यांगनाओं ने लंबे बांसों के बीच लय के साथ संतुलन बनाते हुए आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अरूणाचल प्रदेश का "जू जू झाझा" नृत्य का गीत "जू जू झाझा जामिन जा तमिल मुला...." का गायन तो सुंदर था ही नृत्यांगनाओं ने नृत्य से वहां की निशी जनजाति की परंपराओं से दर्शकों को अवगत करवाया। उद्‌घाटन अवसर पर मणिपुर का "लाय हरोबा" मेतेई समुदाय की संस्कृति को मोहक अंदाज में दर्शाने वाला नृत्य रहा।

कार्यक्रम में मेघालय की गारो जनजाति "वांगला" युगलों को अपने जीवन साथी को चुनने का अवसर प्रदान करता है। आॅक्टेव में पारंपरिक ढोल की थाप पर अपने भावी जीवन साथी के साथ थिरकती

नृत्यांगनाओं ने अपनी लोक संस्कृति का मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया।

इससे पूर्व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक फुरकान खान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए ऑक्टेव के बारे में जानकारी दी। दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर के निदेशक दीपक खिरवाड़कर ने केन्द्र की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर गोवा के कला एवं संस्कृति सचिव श्री दौलत हवलदार, श्री अभय हरणे मुख्य अभियंता (प्रकल्प) कोराड़ी औष्णीक विद्युत केन्द्र, महानिर्मिती कोराडी, श्री राजेश पाटील मुख्य अभियंता (सं.व.सु.) खापरखेड़ा औष्णीक विद्युत केन्द्र, महानिर्मीती खापरखेड़ा उपस्थित थे।

ऑक्टेव नागपुर में ही ट्राइफेड द्वारा शिल्प कलाओं की प्रदर्शनी व बिक्री के लिये हाट बाजार लगाया गया, जिसमें पूवोत्तर राज्यों के शिल्पकारों ने अपनी शिल्प कलाओं का प्रदर्शन किया। ऑक्टेव में ललित कला अकादेमी नई दिल्ली द्वारा पूर्वोत्तर के चित्रकारों द्वारा बनाई चित्रों की प्रदर्शनी दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र परिसर में आयोजित की गई है।

❖ द्वितीय दिवस ❖

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र एवं दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक ककेन्द्र नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में नागुपर में आयोजित "ऑक्टेव /नागुपर" की की दूसरी शाम "मणिपुरी रास" में गोपियों के साथ रास लीला रचाते भगवान श्रीकृष्ण के अनुपम दृश्य को निहार रोमांचित हुए नागुपर वासी, लोक कलाओं ने पूर्वोत्तर की वासंती बयार सी बहा दी।

भारत के उत्तर पूर्व के राज्यों की कला, संस्कृति, शिल्प, साहित्य दृश्य कला का प्रसार भारत के अन्य राज्यों में करने तथा कला व सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को प्रबल करने के ध्येय से आयोजित "आॅक्टेव/ नागपुर" की दूसरी सांझ मणिपुर की संस्थ 'संचाला' के कलाकारों ने वहां की शास्त्रीय शैली "मणिपुर रास" में भगवान श्रीकृष्ण और गोपियों को रास करते दर्शाया। प्रस्तुति श्रीकृष्ण के बसंत रास की थी। मणिपुर की परंपरा अनुसार मान्यता है कि चैत्र माह की पूर्ण चन्द्र रात्रि अथार्त पूर्णिमा को श्री कृष्ण बसंत रास खेलने वृंदावन के 'कुंज' में आते हैं। जिसमें गोपियों के दल का नेतृत्व राधाजी करती हैं। वो श्री कृष्ण की बांसुरी की ध्वनि से उनके आगमन को इंगित करती हैं तथा बाद में कृष्ण गोपियों के साथ होली खेलते हैं। इसके बाद राधा और कृष्ण का मिलन होता है और फिर सखियाँ व गोपियाँ उनकी आरती करती है।

प्रस्तुति में राधा के रूप में नगंगोमबोन्सी चामू व गोपियों के रूप में जोनी बाला, मेमेश्वरी, सुजाता, चिंगलम्बी, रोसी, कुशम ने हरे और लाल रंग की चमकदार परिधान में अपनी नृत्य भंगिमाओं से दर्शकों के सम्मुख रास का अनुपम दृश्य चित्र प्रस्तुत किया। श्री कृष्ण की भूमिका में सुचित्रा ताखील्लम्बम ने अपने नृत्याभिनय से मुरली धर की स्वरूप को मंच पर साकार किया। इनके साथ पुंग पर के. बाशु, बांसुरी पर एल. निकलजीत, मंजीरे पर गौरी लततथा गायन में एस रेनुु ने संगत की।

चार दिवसीय आॅक्टेव के दूसरे दि नही मणिपुर की एक और कला "लाय हरोबा" में मेइती समुदाय के युवा नर्तकों ने जोर आजमाईश का दृश्य सुंदर ढंग से चित्रित किया। इस अवसर पर असम का भोरताल एक सुंदर प्रस्तुति बन सकी।

❖ तृतीय दिवस ❖

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर तथा दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में द.म.क्षे.सां. केंद्र, नागपुर में आयोजित ऑक्टेव @नागपुर के तृतीय दिन पर असम का सत्तरिय नृत्य प्रस्तुत किया गया जिसमे कृष्ण वंदना, सूत्रधारी चाली नाच, 'लीला गोविन्दम, 'उमारुद्रक्शोंबाड ' की प्रस्तुतियाँ से दर्शक अभिभूत हो गये।

कृष्ण की निस्सीम भक्तिपर आधारित कृष्ण वंदना प्रस्तुति एक ताल एवं रत्का में बंधी है एवं इस रचना को भास्कर ज्योति ओझा ने संगीत दिया है.

'चाली नाच' जो की सत्तरिया नृत्य का एक विशिष्ट एवं आकर्षक प्रकार है, एक स्त्रीप्रधान नृत्य हैं एवं इसमें रामदानी, गीतोर नाच, मेला नाच यह तीन भाग होते हैं यह नृत्य ताल सुता एवं एक ताल में बंधी है।

'लीला गोविन्दम' में कृष्ण के जीवन के विभिन्न पराक्रमों को जिवंत किया गया है। भास्कर ज्योजी ओझा द्वारा संगीतबद्ध यह प्रस्तुति राग पहाड़ी में तथा ताल एक ताल एवं सूत काला में रचित है।

'उमा रुद्रक्शोंबाड' प्रस्तुति का लेखन शंकरदेव ने किया हैं एवं इसे भागवत के चतुर्थ प्रकरण पर आधारित है। यह प्रस्तुति राजा दक्ष के अहंकार पर रची गयी है जो भगवन शिव एवं उनकी पत्नी उमा को अपने जीवन से समारोहपूर्वक बाहर करता है।

इसके बाद लोक कलाओं में जू जू जा जा नृत्य में कृषक समुदाय की परम्पराओं को दर्शाया गया। इस अवसर पर नागा कलाकारों ने अग्नि के माध्यम से घर, परिवार और समाज से अंधकार को दूर करने और नकारात्मकता को ख़तम करने की प्रार्थना की गयी।

❖ चतुर्थ दिवस ❖

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र एवं दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में नागुपर में आयोजित "ऑक्टेव / नागुपर" में मंगलवार को असम के दल ने वहां के दशाधिक वाद्य यंत्रों का अनूठी ब्लेंडिंग कला रसिको के लिये प्रस्तुत की।

आॅक्टेव के समापन अवसर पर मुक्ताकाशी रंगमंच पर मंगलवार शाम कार्यक्रम की शुरूआत असम के "इन्स्ट्रूमेन्टल से हुई जिसमें असम में लोेक जन जीवन में लोक कलाओं के साथ बजाये जाने वाले विभिन्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग उत्कृष्ट ढंग से किया गया। प्रस्तुति की शुरूआत असम के ड्रम एन्सेम्बल से हुई जिसमें बास ऑन असम बुरमजी में तीव्र लयकारी के साथ बांसुरी वादन दर्शकों को खूब रास आया।

इसके बाद "मैलोडी ऑफ़ असम" में विभिन्न पहाड़ी रागों पर आधारित व असम में बसर करने वाली जातियों का सांगीतीय सम्मिलन जिसमें बोडो, झुमुर, राभा, तिवा, बिहू आदि की संगीत सरिता का प्रयोग सुमधुर ढंग से किया गया। इस प्रस्तुति में ढोल, डोबा, खुल, नागुड़ी, भोरताल, पेंपा, गोगोना, बांसुरी, तबला, वाॅयलिन, डोगर, दुतारा, खुफी ताल आदि पारंपरिक वाद्य यंत्रों का आपसी सामंजस्य और लयकारी के साथ बांसुरी वादन व पेंपा की टेर मधुर बन सकी। प्रस्तुति में दिलीप, हीरा, मोहन, मृणाल, माधेल, रितुपरा, रिपुदमनबितापर गागोई आदि साथियों ने अपनी कला का प्रदर्शन श्रेष्ठ ढंग से किया।

असम की इस जानदार प्रस्तुति के बाद प्रसिद्ध कोरियोग्राफर तरूण प्रधान द्वारा कोरियोग्राफ किया हुआ कार्यक्रम दर्शाया गया जिसमें एक बार फिर असम की बालिकाओं ने पेंपा और गोगोना व ढोल की थाप पर बिहू नृत्य से समां सा बांध दिया। कार्यक्रम में ही त्रिपुरा के रियांग समुदाय द्वारा किया जो वाला "होजागिरी" नृत्य की प्रस्तुति दर्शकों के लिये हैरत अंगेज प्रस्तुति रही जिसमें बालिकाओं ने अपने पारंपरिक वाद्यों पर संतुलन और दैहिक भंगिमाओं का प्रदर्शन मोहक ढंग से किया। प्रस्तुति में सिर पर बोतल संतुलित करते हुए विभिन्न प्रकार के करतब दिखाये। त्रिपुरा का ही कृषि पर आधारित नृत्य "मामिता" आकर्षक प्रस्तुति बन सकी।

ऑक्टेव के समापन अवसर पर मिजोरम का चेराव में बालिकाओं ने बेम्बू के साथ लयकारी का सामंजस्य बिठते हुए अद्भुत नृत्य प्रस्तुत किया। सिक्किम की राय और नेपाली समुदाय का चंडी नृत्य दर्शकों द्वारा खूब पसंद किया गया जिसमें चंडी पूजा के साथ देवी देवताओं से अच्छी फसल की कामना की गई। मिजोरम की पावी व मारा जनजाति का सारलामकाई नृत्य के माध्यम से वहां के कलाकारों ने नागपुर के कला रसिकों को अपनी अनूठी परंपराओं से अवगत करवाया।

इस अवसर पर मणिपुर का थांग-ता व स्टिक परफोरमेन्स दर्शकों के लिये रोमांचकारी प्रस्तुति बन सकी वहीं वांगला आद्यैर पुग ढोल चोलम में ढोल वादकों ने अपनी अनूठी शैली से दर्शकों को आल्हादित सा कर दिया।

समापन अवसर पर ही ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा आयोजित चित्र प्रदर्शनी तथा ट्राइफेड द्वारा प्रायोजित शिल्पकारों के हाट बाजार में कलात्मक वस्तुओं के खरीददारों की खासी भीड़ रही व

शिल्प उत्पादों को नागपुर वासी एक सोगात के रूप में अपने घर ले गये। इस अवसर पर पयिचम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक फुरकान खान तथा दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक श्री दीपक एस खिरवाड़कर ने उत्सव को सफल बनाने के लिये नागपुर के कला प्रमियों का आभार व्यक्त किया।

◉ ब्रह्मनाद – तृतीय पुष्प ◉

१. करीब १ से १:३० घंटा चली भारी वर्षा के बावजूद द.म.क्षे.सां. केंद्र, नागपुर द्वारा रविवार दिनांक ०९ दिसम्बर २०१८ को आयोजित 'ब्रह्मनाद' के तृतीय पुष्प को रसिक श्रोताओं के भरसक प्रतिसाद से इस आयोजन की लोकप्रियता फिर एकबार सिद्ध हुयी। नागपुर के सुप्रसिद्ध सितारवादक नासिर खान एवं मुंबई के विख्यात शास्त्रीय गायक आदित्य खांडवे ने अपनी प्रस्तुतियों से उपस्थित लोगों का दिल जीता। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. चंद्रहास जोशी (वरिष्ठ गायक), श्रीमती दीपाली खिरवडकर, श्रीमती मृदुला सुदामे, द.म.क्षे. सां. केंद्र, नागपुर के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर एवं उपनिदेशक मोहन पारखी इनके हस्ते दीपप्रज्वलन से हुआ।

वर्षा के कारण कार्यक्रम हमेशा की तरह मध्यवर्ती लॉन के बजाय केंद्र परिसर के हॉल में स्थानांतरित किया गया। नासिर खान के सितारवादन से कार्यक्रम की शुरुवात हुयी। उन्होंने 'राग – ललित' से अपनी प्रस्तुति का प्रारंभ किया। इसके बाद उन्होंने जोड़ , आलाप झाला के बाद त्रिताल मध्यलय में बंदिश पेश की। नासिर ने 'मिश्र धुन' से अपनी प्रस्तुति का समापन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्हें तबलेपर हर्षल ठाणेकर ने साथसंगत की। दमक्षेसां. केंद्र, नागपुर के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर ने ए टॉप ग्रेड मिलनेपर नासिर खान को सम्मानित किया, एवं संक्षिप्त में अपने विचार रखें।

इसके उपरांत आदित्य खांडवे ने नादपूर्ण शास्त्रीय / उपशास्त्रीय गायन की प्रस्तुति से रसिकों का ह्दय जीता। उन्होंने अपनी प्रस्तुति की शुरुवात राग 'मियाँ की तोड़ी' में विलंबित त्रिताल में 'मोरे मन गा' इस पारंपारिक बंदिश से की। इसके पश्चात राग 'अल्हैया बिलावल' में द्रुत त्रिताल में 'बंदिश' प्रस्तुत की। आदित्य ने अपनी प्रस्तुति का समापन श्रोताओं को 'अल्हैया बिलावल' में 'तराना' सुनाकर किया। उन्हें तबलेपर सन्देश पोपटकर, संवादिनिपर श्रीकांत पिसे एवं तानपुरे पर प्रियंका मस्के ने संगत की।

◉ स्मृतिगंध – प्रथम दिवस ◉

दिवंगत सुधीर फडके, ग. दि. माडगूळकर, तबलानवाज उस्ताद अल्लारखाँ तथा पु. ल. देशपांडे इनके जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर द्वारा 'सप्तक', नागपुर के सहयोग सेआयोजित “स्मृतिगंध” कार्यक्रम का उद्घाटन शुक्रवार दिनांक २१ दिसम्बर २०१८ को शाम ६:३० बजे नागपुर महानगर की मा. महापौर श्रीमती नंदाताई जिचकार इनके करकमलों द्वारा दीपप्रज्वलित कर हुआ। इस अवसर पर द.म.क्षे.सां. केंद्र के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर, उपनिदेशक मोहन पारखी, केंद्र के कार्यक्रम समिति सदस्य श्री. कुणाल गडेकर, कार्यक्रम अधिकारी दीपक कुलकर्णी, गोपाल बेतावर एवं सप्तक संस्था के डॉ. उदय गुप्ते, श्री. विलास मानेकर उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत केंद्र निदेशक ने किया। इस अवसर पर नागपुर के वरिष्ठ कलाकारश्रीमती. कुसुम कमलाकर डॉ. चित्रा मोडक साथ ही गीतरामायण कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता श्री. श्याम देशपांडे इनका सम्मान मा. महापौर के हस्ते किया गया।

कविवर्य सुरेश भट सभागृह में आयोजित इस ४ दिवसीय समारोह में आज प्रथम दिन नागपुर की संस्कारभारती संस्था के गायक-कलाकारों द्वारा “गीतरामायण” की अनुपम प्रस्तुति दी गयी।कार्यक्रम की शुरुवात 'कुशलव रामायण गाती' इस गीत से हुयी।तथा 'गा बालांनो श्रीरामायण' इस गीत से समापन हुयी। गायक कलाकारों में श्याम देशपांडे, अमर कुलकर्णी, शशांक दंडे, गुणवंत घटवाई, आकांक्षा नगरकर देशमुख, वैशाली उपाध्ये, अनुजा जोशी गाड़े तथा वादक कलाकारों में तबला संगत मोरेश्वर दहासहस्त्र, रवि सातफले, सिंथेसायझर श्रीकांत पिसे, परिमल जोशी, व्हायोलिन शिरीष भालेराव, तालवाद्य गजानन रानडे, विक्रम जोशी इनका समावेश था। कार्यक्रम का निवेदन श्रीमती. रेणुका देशकर, संगीत संयोजन श्याम देशपांडे तथा नृत्य निर्देशन श्रीमती. स्वाति भालेराव ने किया। कार्यक्रम को रसिक श्रोता भारी संख्या में उपस्थित थे।

◉स्मृतिगंध – द्वितीय दिवस ◉

दिवंगत सुधीर फडके, ग.दि.माडगूळकर,तबलानवाज उस्ताद अल्लारखाँ तथा पु.ल.देशपांडे इनके जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र,नागपुर द्वारा 'सप्तक',नागपुर के सहयोग सेआयोजित 'स्मृतिगंध' संगीत-नृत्य सभा के द्वितीय दिवस शनिवार, २२ दिसंबर २०१८का शुभारंभ शाम ६:३० बजे श्री. बिजय बिस्वाल इनके करकमलों द्वारा दीपप्रज्वलित कर हुआ। इस अवसर पर द.म.क्षे.सां.केंद्र के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर,कार्यक्रम अधिकारी दीपक कुलकर्णीएवं सप्तक संस्था के डॉ. उदय गुप्ते, श्री. विलास मानेकर उपस्थित थे।श्री. आनंद माडगूळकर एवंअतिथियों का स्वागतका सत्कार केंद्र निदेशक ने किया। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ चित्रकार श्री. बिजय बिस्वाल को 'गदिमायन' कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता श्री. आनंद माडगूळकर के शुभहस्ते सम्मानित किया गया।

कविवर्य सुरेश भट सभागृह में आयोजित इस ४ दिवसीय समारोह में द्वितीय दिन पर ग. दि. माडगूळकर के सुपुत्र श्री. आनंद माडगूळकर (पुणे) ने गदिमायन कार्यक्रम की प्रस्तुति दी।जिसमे उन्होंने ग. दि. माडगूळकर के किस्से, गीत एवं लावणी आदि की मनोरंजक प्रस्तुति दी।कार्यक्रम की शुरुवात 'प्रभात समयो पातला' इस गीत से हुयी।विख्यात लावणी गीत बुगडी माझी सांडली ग ने श्रोताओं का वन्स मोर लिया, विठ्ठला तू वेडा कुंभार तथा इंद्रायणीकाठी इन गीतों ने वातावरण भक्तिरस से भर दिया।गीतरामायण के कुछ गीत, 'जग हे बंदीशाला' यह भावगीत एवं अन्य गीतों के बाद 'कानडा राजा पंढरीचा'इस सुश्राव्य भजन से कार्यक्रम का समापन हुआ। गायक कलाकारों में आनंद माडगूळकर,अभिजित पंचभाई,डॉ. अपर्णा मयेकर, मिनल पोंक्षे तथा वादक कलाकारों में तबलेपर सचिन ढोमने, ढोलकीपर कृष्णा गायकवाड, तालवाद्यपर विक्रम जोशी, किबोर्ड पर महेंद्र ढोले, संवादिनी / की-बोर्डपर श्रीकांत पिसे पर का समावेश था। कार्यक्रम का निवेदन श्रीमती. वेदिका देशपांडेने किया। कार्यक्रम का आनंद लेने रसिक-श्रोता एवं कलाप्रेमी भारी संख्या में उपस्थित थे।

आयोजित

|| गदिमायन ||

शनिवार दि. 22 दिसंबर, 2018
|| गदिमायन ||

SOUTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE,
Ministry of Culture, Government of India
आयोजित
“स्मृतिगंध”

◉ स्मृतिगंध - तृतीय दिवस ◉

दिवंगत सुधीर फडके, ग.दि.माडगूळकर,तबलानवाजउस्ताद अल्लारखाँ तथा पु.ल.देशपांडे इनके जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र,नागपुर द्वारा 'सप्तक',नागपुर के सहयोग सेआयोजित 'स्मृतिगंध' संगीत-नृत्य सभा में आज २३ दिसंबर २०१८ के कार्यक्रम का शुभारंभ शाम ६:३० बजे अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त महिला तबलावादकपंडिता अनुराधा पाल केकरकमलों द्वारा दीपप्रज्वलित कर हुआ। इस अवसर पर द.म.क्षे.सां.केंद्र के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर, उपनिदेशक मोहन पारखी, कार्यक्रम अधिकारी दीपक कुलकर्णीएवं सप्तक संस्था के डॉ. उदय गुप्ते, श्री. विलास मानेकर उपस्थित थे।श्रीमती अनुराधा पाल एवं अतिथियों का स्वागत एवं सत्कार केंद्र निदेशक ने किया।इस अवसर पर वरिष्ठ कलाकार श्री. अन्नासाहेब गिलुरकर एवं देवानंद गडिकर को पंडिता अनुराधा पाल के शुभहस्ते सम्मानित किया गया।

कविवर्य सुरेश भट सभागृह में आयोजित इस ४ दिवसीय समारोह में तृतीय दिन पर तबलानवाज उस्ताद अल्लारखां की स्मृति में तालसाधना समूह संस्था, नागपुर के १७५ विद्यार्थी तबलावादकों ने रवि सातफले एवं अन्य शिक्षकों के मार्गदर्शन में 'तालशतक' यह अनोखी तबलावादन की प्रस्तुति एकसाथ दी।यह कार्यक्रम अपनी तरह का प्रथम प्रयोग है।इस प्रस्तुति का संगीत संयोजन रवि सातफले ने किया।इसके उपरांत द.मक्षे.सां. केंद्र के निदेशक द्वारा सभी सहभागी तबलावादक विद्यार्थी एवं उनके शिक्षकों का प्रमाणपत्र एवं स्मृतिचिन्ह देकर गौरव किया गया।इसके उपरांत उस्ताद अल्लारखां उर्फ़ 'अब्बाजी' की एकमेव महिला शिष्या पंडिता अनुराधा पाल ने अपने गुरु को श्रद्धांजली हेतु उनकी विशेषताओं को दर्शाती रचनाओं को विविध तालों में प्रस्तुत किया। उन्हें तुषार रतुरी ने लहरसंगत की तथा १० विद्यार्थी तबलावादकों ने भी साथसंगत की।कार्यक्रम का निवेदन श्रीमती. श्वेता शेलगावकरने किया। कार्यक्रम का आनंद लेने रसिक-श्रोता एवं कलाप्रेमी भारी संख्या में उपस्थित थे।

कल २४ दिसंबर को 'स्मृतिगंध' समारोह के अंतिम दिवस पर विख्यात साहित्यकार, कवि स्व. पु. ल. देशपांडे की स्मृति में 'पुलकित' नामक प्रस्तुति सिनेकलाकार अरुण नलावडे, अतुल परचुरे तथा विघ्नेश जोशी एवं सहकलाकार देंगे।इस कार्यक्रम की निर्मिती विद्याधर रिसबुड, अवर कल्चर इवेंट्स, मुंबई द्वारा की गयी है।

स्मृतिगंध - चतुर्थ दिवस

दिवंगत सुधीर फडके, ग.दि.माडगूळकर, तबलानवाज उस्ताद अल्लारखाँ तथा पु.ल.देशपांडे इनके जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र,नागपुर द्वारा 'सप्तक',नागपुर के सहयोग सेआयोजित 'स्मृतिगंध' संगीत-नृत्य सभा में आज २४ दिसंबर २०१८ के कार्यक्रम का शुभारंभ शाम ६:३० बजे दिनेश आर. पाटील(महालेखाकार, महालेखाकार कार्यालय, नागपुर) एवं डॉ. दीपक पडोले (निदेशक, व्हीएनआयटी, नागपुर) केकरकमलों द्वारा दीपप्रज्वलित कर हुआ। इस अवसर पर द.म.क्षे.सां.केंद्र के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर, उपनिदेशक मोहन पारखी, कार्यक्रम अधिकारी दीपक कुलकर्णीएवं सप्तक संस्था के डॉ. उदय गुप्ते, श्री. विलास मानेकर उपस्थित थे।प्रमुख अतिथियों का स्वागत एवं सत्कार केंद्र निदेशक ने किया। इस अवसर पर साहित्य क्षेत्र का बड़ा नाम लेखिका, चरित्रकार श्रीमती शुभांगी भडभडे तथा कलाकार, निर्देशक, पटकथा लेखक डॉ. विनोद इंदुरकर इन्हें मुख्य अतिथियों के शुभहस्ते सम्मानित किया गया।

कविवर्य सुरेश भट सभागृह में आयोजित इस ४ दिवसीय समारोह में चतुर्थ एवं अंतिम दिन पर विख्यात मराठी साहित्यकार स्व. पु. ल. देशपांडे की स्मृति में 'पुलकित'- अर्थात समग्र पु. ल. देशपांडे यह कार्यक्रम विद्याधर ज. रिसबुड, अवर कल्चर इवेंट्स - मुंबई द्वारा प्रस्तुत किया गया।इसमें सिनेकलाकर अरुण नलावडे, अतुल परचुरे, विघ्नेश जोशी, केतकी भावे-जोशी, निनाद आजगावकर, गौरी दामले, भारती मालवनकर इन्होने पु. ल. देशपांडे इनके जीवनपर आधारित किस्से, गीत, साक्षात्कार (इंटरव्यू), उनके साहित्य पर आधारित पात्र एवं चर्चा को साभिनय प्रस्तुत किया।तथा उनके कार्यक्रम तथा गीतों की चुंनिंदा चित्रफीत भी एलईडी पर्देपर दिखाई गई।इस प्रस्तुति का संगीत संयोजन, नागपुर के श्रीकांत पिसे ने किया। बासरी वादन अरविंद उपाध्ये ने किया। तबलेपर प्रमोद बावने तथा ऑक्टोपैड पर योगेश हिवराले ने साथसंगत की। कार्यक्रम का मंच संचालन दीपाली केलकर इन्होने कियातथा निवेदन श्वेता शेलगावकर ने किया।कार्यक्रम का आनंद लेने रसिक-श्रोता एवं कलाप्रेमी भारी संख्या में उपस्थित थे।

इस प्रकार से 'स्मृतिगंध' संगीत-नृत्य सभा का यशस्वी समापन हुआ। रसिक प्रेक्षकों ने इस संकल्पना एवं प्रतिदिन प्रस्तुत कार्यक्रम की भरसक प्रशंसा की। द.म.क्षे.सां. केंद्र, नागपुर के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर इन्होने सभी कलाकारों का आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम यशस्वी करने हेतु केंद्र के कार्यक्रम अधिकारी एवं कर्मचारियों की सराहना की।

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

SOUTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE, NAGPUR
Ministry of Culture, Government of India
"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

"स्मृतिगंध"

❖ गीतरामायण, टीळक स्मारक मंदिर पुणे ❖

ग. दि. माडगूळकर लिखित एवं सुधीर फडके उर्फ़ बाबूजी प्रस्तुत 'गीत रामायण' मराठी भाषा का अनमोल सांस्कृतिक सौगात है। यह वर्ष दोनों की जन्मशताब्दी भी है। इस अवसर पर इन महनीय कलाकारों को आदरांजली अर्पण करने हेतु दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर एवं संस्कारभारती, पुणे की ओर से गीत रामायण का आयोजन २८ दिसंबर को शाम ५:३० बजे तिलक स्मारक मंदिर में किया गया था।

संस्कारभारती, नागपुर के ४० प्रतिथयश कलाकार नृत्य, नाट्य एवं संगीत के माध्यम से राम कथा प्रस्तुत करेंगे। महापौर श्रीमती. मुक्ता तिलक इनके शुभ हस्ते कार्यक्रम का उद्घाटन होगा। इस अवसर पर जेष्ठ संगीतज्ञ, गीत रामायण के संगीत संयोजक प्रभाकर जोग, वरिष्ठ निदेर्शक राजदत्त, गदिमा प्रतिष्ठान के विश्वस्त श्रीधर माडगूळकर, , दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डॉ. दीपक खिरवडकर, संस्कार भारती नागपूर की अध्यक्षा श्रीमती कांचन गडकरी, द.म.क्षे. सां. केंद्र के कार्यकारी मंडल की सदस्या कस्तुरी पायगुडे-राणे व पुणे महापालिका की सभासद डॉ. श्रद्धा प्रभुणे-पाठक प्रमुखता से उपस्थित थे।

तथा इस अवसर पर दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपूर की ओर से वरिष्ठ पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. गो बं. देगलूरकर एवं वरिष्ठ व्हायोलिन वादक रमाकांत परांजपे इनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम को भारी मात्रा में रसिक प्रेक्षक उपस्थित थे।

◈ संकल्पना एवं मार्गदर्शन ◈

डॉ. दीपक खिरवडकर

(निदेशक, दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपूर)

◈ लेखन एवं संरचना ◈

श्री. स्वप्नील बाळकृष्ण भोगेकर

(माध्यम एवं प्रसारण विभाग, द.म.क्षे.सां. केंद्र, नागपूर)

◈ फोटोग्राफी ◈

श्री. गजानन शेळके

(माध्यम व प्रसारण विभाग, द.म.क्षे.सां. केंद्र, नागपूर)

◈ मुखपृष्ठ एवं ग्राफ़िक्स डिजाईन ◈

श्री. मुकेश गणोरकर

(शारदा कंसल्टंसी सर्विसेस प्रा. लिमिटेड)